

— परि 1) *herumwerfen, rings herum anlegen, rings herum stellen, umnehmen*: पृच्छं पर्यस्येति AV. 12, 3, 21. AIT. Br. 4, 1. med.: संतरा मे खतां पर्यस्तामैवैनमितत्ततं पर्यास्यत् CAT. Br. 3, 4, 3, 2. अग्रिमयीः पुरस्त्रि-पुरं पर्यास्यत् AIT. Br. 2, 11. अ-य-न्वेदति पर्यन्यदस्यते AV. 13, 2, 43. पर्यस्त इव लोको ऽयं युधिष्ठिरनिवेशे MBh. 2, 1898. (die Augen) *herumwerfen, herumgehen lassen*: मुखेन पर्यस्तविलोचनेन KUMĀRAS. 3, 68. पर्यस्तनेत्रो-त्पला AMAR. 26. *um Etwas verbreiten*: ताम्रोष्ठपर्यस्तरुचः स्मितस्य KUMĀRAS. 1, 45. — 2) *umgeben, umringen, umstricken*: पर्यासिपातां गावौ वत्सेन P. 3, 1, 52, Sch. कामपाशपर्यस्तः R. 2, 31, 12. विषयाक्षेपर्यस्तबुद्धेः BHARTṚ. 3, 29. — 3) *sich umdrehen*: पर्यस्य (auf dem Bette) AMAR. 18. — 4) *umwerfen, niederwerfen*: अथोत्तानं पशुं पर्यस्यति CAT. Br. 3, 8, 2, 12. दासी घटमप्यो पूर्णं पर्यस्येत् — पदा M. 11, 183. पाखाण्डागमाः निर्मूलतया स-दागमार्णवप्रवाहण पर्यस्ताः (Sch.: = द्वारे प्रतिसिताः) PRAB. 87, 18. pass. reflex. पर्यास्यत् P. 3, 1, 52, Sch. *umstürzen, niederfallen, herabsinken*: पर्यस्ताः पृथिव्यामश्रुविन्दवः RAGH. 10, 76. चिद्रूपेषु पर्यस्तम् — शङ्खयुग्मम् 13, 13. भग्नान्पर्यस्तरथम् 5, 49. एकांसपर्यस्तशिरस्त्रालम् 7, 59. — *caus. fallen zu lassen zwingen*: तेन पर्यासयताम्विन्दून् RAGH. 13, 28.

— विपरि med. *umkehren, umwechseln, vertauschen*: इतरया पात्रे विपर्यस्येति CAT. Br. 4, 3, 1, 13. विपर्यस्य पात्रमुखे KĀTJ. ĆR. 9, 13, 14. 22. 26. 4, 7, 27. 2, 6, 46. विपर्यस्त *umgekehrt, verstellt, verkehrt* AIT. Br. 1, 25. CAT. Br. 2, 2, 1, 13. MBh. 3, 13487. P. 2, 3, 56, Sch. विपर्यस्तमनश्चेष्टैः MĀKĀH. 115, 4. विपर्यसम् adv. *abwechselnd, wechselseitig* AIT. Br. 3, 28, 6, 19. CAT. Br. 3, 2, 4, 16. 7, 1, 22. 4, 2, 2, 9. 6, 7, 4, 17. अविपर्यसम् 3, 7, 1, 22.

— प्र *fortschleudern, hinschleudern, hinwerfen, werfen*: प्र यदित्या परावतः शोचिर्न मानमस्यैव RV. 1, 39, 1. 121, 13. प्र या वानं न केषत् पु-रुमस्यैवर्तुनि 5, 84, 2. प्रच्छिद्योदपात्रे प्रास्यति CAT. Br. 3, 1, 2, 8. 7, 4, 8. 8, 2, 18. 3, 25. 4, 2, 1, 21. KĀTJ. ĆR. 6, 6, 14. 8, 13. 18, 3, 4. 5, 15. यथा सैन्य-वखिल्य उदके प्रास्तः BRH. ĀR. UP. 2, 4, 12. M. 2, 64. 3, 76. प्रास्येदात्मा-नमौ 11, 73. पूर्णकुम्भमप्यो नवम् — प्रास्येयुः (*umwerfen*) 186.

— अनुप्र *nachwerfen* CAT. Br. 3, 8, 2, 28. 9, 3, 3, 14. 4, 16, 17. KĀTJ. ĆR. 6, 6, 28. — Vgl. अनुप्रास.

— अग्रिप्र *auf Etwas hinwerfen*: तृणं चाबालमभिप्रास्यति CAT. Br. 4, 2, 5, 5. KĀTJ. ĆR. 6, 8, 28. *hinwerfen*: अग्रिप्रास्येनत् (so zu lesen st. अग्रि-प्रास्य) KĀND. UP. 6, 13, 2.

— प्रतिप्र *daraufwerfen*: प्रतिप्रास्योत्सुकम् KĀTJ. ĆR. 6, 3, 4.

— प्रति 1) *zuwerfen, hinwerfen*: प्रत्यस्ते नमुचिः शिरः VS. 10, 14. तं प्रत्यस्यामि मृत्यवे AV. 5, 8, 5. 6, 37, 3. यद्यथाहिनिर्जयनी वल्मीके मृता प्रत्यस्ता शयीत CAT. Br. 14, 7, 2, 10 = BRH. ĀR. UP. 4, 4, 7. — 2) *umschlagen, einbiegen*: अतकामु तर्हि पश्चात्प्रत्यस्येत् CAT. Br. 3, 2, 1, 4. — 3) *abwerfen, ablegen, fahren lassen*: प्रत्यस्तर्धैयम् (das vorangehende अनु alsdann muss getrennt werden) BHARTṚ. 1, 25.

— वि *auseinanderwerfen, zertrennen, zerstückeln, zerstreuen, trennen, sondern*: स्तेनार्नाद्रं व्यसन्निदत्तः RV. 4, 3, 11. विश्वा इत्स्येया मरुतो व्य-स्यथ 5, 53, 6. व्योस (med.) इन्द्रः पतनाः 7, 20, 3. अस्मन्मयोनि नक्ष्त्रा व्य-स्यन् 10, 67, 3. व्यस्यन्विश्वा अनीरा अमीवा VS. 11, 47. अथो सप्ततानि-न्द्राणि मे विषूचीनाव्यस्यताम् 17, 64. व्यस्यै कृदशितान्यस्यतम् AV. 3, 25, 6. अक्षीन्व्यस्यतात्पथः 10, 4, 6. तमो व्यस्य 12, 3, 18. RV. PRĀT. 14, 19. व्यस्यन् — राक्षसान् BHARTṚ. 8, 116. व्यास्यत् — शस्त्रसंक्षतीः 9, 31. व्यस्यन्-

दन्यो (den Durst vertreibend) पयोभिः 3, 40. व्यस्य वेदाश्चतुरः MBh. 1, 4236. विव्यासैकं (unregelm. redupl., als wenn व्यस् die Wurzel wäre) चतुर्थी यो वेदम् 2212. विव्यास वेदान्यस्मात्स तस्माद्यास इति स्मृतः 2417. व्य-स्त zerstückt RV. 1, 32, 7. *vertrieben, entfernt*: प्रचिततयन्यस्तसूर्या तप MEGH. 104. व्यासङ्गव्यस्तर्धैव BHARTṚ. 1, 66. *getrennt, verändert* RAGH. 11, 73. *getrennt, gesondert, vereinzelt, einzeln genommen*: व्यस्ता-स्तारागणा इव MBh. 3, 14380. (उपक्रमैः) व्यस्तैश्चैव समस्तैश्च M. 7, 159. JĀGĀ. 1, 366. ARĀ. 10, 64. P. 2, 3, 56, Sch. चतुर्थी — व्यस्तः प्रसवः RAGH. 10, 85. तदस्ति किं व्यस्तमपि (vereinzelte, eins davon) त्रिलोचने KUMĀRAS. 5, 72. *getrennt, verschieden, mannigfaltig* PRAB. 97, 19. व्यस्ते काले hin und wieder, bisweilen MBh. 3, 17052. *verwirrt* AK. 3, 2, 21.

— सम् 1) *verbinden, aneinanderreihen, anreihen, zusammenlegen*: उभावतौ समस्यताम् AV. 6, 89, 3. विबुक्रमवात्सप्रे समस्यति CAT. Br. 6, 7, 4, 12. 13. 14, 3, 1, 1. रज्जुं सतथा समस्यति 10, 2, 3, 8. 3, 3, 2, 13. KĀTJ. ĆR. 3, 5, 1. 19, 7, 8. 5, 12, 13. 8, 3, 16. समसम् inf. CAT. Br. 4, 1, 2, 26. 12, 8, 3, 14. pass. *zusammengesetzt werden* (gramm.): सर्वो ऽप्यवयवो ऽङ्का स-मस्यते P. 2, 2, 1, Sch. *samasyamane* — युष्मदस्मदी 7, 2, 90. KĀR. 1. समस्त (समस्तं P. 4, 2, 104, VĀRTT. 19, Sch.) *verbunden, vereinigt, eine Einheit bildend, ganz, alles, alle insgesamt* AK. 3, 2, 14. TRIK. 3, 3, 421. H. 1433. CAT. Br. 2, 3, 4, 7. KĀND. UP. 2, 1, 1. 8, 11, 1. M. 3, 85. 7, 57. 159. 198. 8, 255. JĀGĀ. 1, 366. 3, 191. R. 3, 41, 38. 4, 8, 10. 56, 16. PAÑKAT. 236, 18. AMAR. 79. VID. 4. *componirt* (gramm.) P. 1, 1, 73. VĀRTT. 3. — 2) *vermengen*: यदस्याः पल्पूलनं शकृदासी समस्यति AV. 12, 4, 9.

— अनुसम् *noch hinzulegen, vollends beifügen*: वर्द्धिरनुसमस्यति परि-धोश्च CAT. Br. 2, 6, 1, 47. 4. 1, 8, 3, 18. 22. तेदेन कृत्स्नं कृतानुसमस्यति 3, 8, 3, 37.

— उपसम् *darauflegen* CAT. Br. 6, 6, 4, 9.

3. अस्, अस्ति, अस्ते *gehen; leuchten; nehmen* DHĀTUP. 21, 21 (v. l. अष्).

अस s. u. तद्.

असंयत (3. अ + सं^०) adj. *nicht beunruhigt*: असंयतो व्रतेतै तेति पुष्य-ति RV. 1, 83, 3.

असंयत् (3. अ + सं^० von इ) adj. *nicht eingehend, nicht zusagend*: अ-संयदेतन्मनेतो कृदो मे AV. 18, 1, 14.

असंयुक्त (3. अ + सं^०) n. gramm. *Hiatus* (wo Halbvocal eintreten sollte) RV. PRĀT. 15, 7.

असंयुत (3. अ + सं^०) m. ein Bein. Vishṇu's H. ८. 67.

असंवत्सरभूत (3. अ + सं^० - भूत) adj. *kein Jahr hindurch genährt, vom Feuer* CAT. Br. 7, 1, 2, 11. 5, 1, 34. 9, 5, 1, 62. 63. KĀTJ. ĆR. 16, 6, 9. Davon ०भूतिन् *der es kein Jahr hindurch nährt* KĀTJ. ĆR. 17, 5, 6.

असंव्याहारिन् (3. अ + सं^०, das allein nicht im Gebrauch sein soll) adj. *gaṇa* ग्राह्यादि zu P. 3, 1, 134.

असंशय (3. अ + सं^०) m. *Abwesenheit eines Zweifels*: स्त्रीवादवद्यमा-त्मानं मन्यसे त्वमसंशयः *weil du ein Weib bist, hältst du dich für un-verletzlich; es findet kein Zweifel statt* R. 5, 23, 25; vgl. 29, 20: नाना-प्रकर्षैर्विर्मामुपेयान् संशयः und PAÑKAT. III, 70. In der Regel असंशयम् adv. *ohne Zweifel, ganz sicher* M. 2, 93. 7, 12. BRĀHMAN. 2, 21. 3, 9, 10. N. 13, 44. 21, 10. R. 1, 23, 18. 4, 8, 2. ८. 21.